

देश — भूभाग — Country — भारत मेरा देश है और मुझे अपने देश पर गर्व है। मुझे अपने देश की परंपरा, सांस्कृतिक भावनाएं, जीवन मूल्यों पर गर्व है और हमेशा रहेगा। भारत यह दुनिया का सातवां सबसे विशाल और विस्तृत देश है। भारत दुनिया का दूसरा सबसे अधिक और घनी आबादी वाला देश है। भारत को इंडिया, हिंदुस्तान भी कहा जाता है। हमारे देश की राजधानी दिल्ली है। भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है, जो हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी धर्मों के लोगो को सामान मान्यता प्रदान करता है। भारत में 29 राज्य है और सभी राज्यों की अपनी विशेष भाषा है, और फिर भी हम सब भारतवासी एक सूत्र में बंधे हुए है। पौराणिक कथाओं के अनुसार हमारे देश का नाम प्राचीन हिन्दू राजा भरत के नाम पर पड़ा था। भारत की हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की सभ्यता आज भी विश्व प्रसिद्ध है। देश की मिट्टी और उसकी सुगंध के एहसास को ब्यान नहीं किया जा सकता है। भारत को विविधताओं का देश कहा जाता है। हमारे देश के ड्राफ्टिंग कमेटी के अध्यक्ष डॉ बी आर अंबेडकर को भारतीय संविधान का पिता कहा जाता है। संविधान सभा के 389 सदस्यों ने देश से संबंधित सभी मुद्दों पर विस्तार से जांच करने के लिए समितियों का गठन किया था। हमारे देश के संविधान ने प्रत्येक देशवासी को बराबर के अधिकार दिए है। हमारा देश लोकतांत्रिक देश है, यहाँ प्रत्येक नागरिक को अपने विचारों को रखने का अधिकार है। भारत के पड़ोसी देश के नाम पाकिस्तान, नेपाल, बर्मा, बांग्लादेश, इंडोनेशिया, मलेशिया और श्रीलंका है। हमारे देश की संस्कृति और गहन इतिहास पूरे विश्व को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहाँ के ऐतिहासिक स्मारक, इमारतों की वास्तुकला, जन जीवन का दशकों और उसे भी पुराना इतिहास पर्यटकों को सम्मोहित कर देते है। भारत अपनी पीढ़ियों से चली आ रही संस्कृति और परम्पराओं को संजोह कर रखना वाला देश है।



सुख — आनंद — Happiness — सुख एक अनुभूति हैं। इसमे आनन्द, अनुकूलता, प्रसन्नता, शांति इत्यादि की अनुभूति होती हैं उसे सुख कहा जाता

हैं। सुख की अनुभूति मन से जूड़ी हुई हैं और बाह्य साधनो से भी सुख की अनुभूति हो सकती हैं और अन्दर के आत्मानुभव से बिना किसी बाह्य साधन एवम अनुकूल वातावरण के बिना भी हरहंश सुख की अनुभूति हो सकती हैं। नारद ने युधिष्ठिर को सुख की परिभाषा बताते हुए सबसे पहले 'अर्थ' की बात कहा था। उनके मत में यदि मनुष्य के पास निम्नलिखित ६ वस्तुएँ हों तो वह सुखी है—

अर्थागमो नित्यमरोगिता च, प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च।

वश्यस्य पुत्रो अर्थकरी च विद्या षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन्

हे राजन छः चीजे अपने पास होना जीवलोक में 'सुख' हैं — अर्थागम (पैसा आवे), निरोग काया, प्रिय पत्नी, प्रियवादिनी पत्नी, आज्ञाकारी पुत्र, अर्थकरी विद्या।



स्वर — सुर — **Tone** — संगीत में वह शब्द जिसका कोई निश्चित रूप हो और जिसकी कोमलता या तीव्रता अथवा उतार—चढ़ाव आदि का, सुनते ही, सहज में अनुमान हो सके, स्वर कहलाता है। भारतीय संगीत में सात स्वर (**notes of the scale**) हैं, जिनके नाम हैं — षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत व निषाद।

यों तो स्वरों की कोई संख्या बतलाई ही नहीं जा सकती, परंतु फिर भी सुविधा के लिये सभी देशों और सभी कालों में सात स्वर नियत किए गए हैं। भारत में इन सातों स्वरों के नाम क्रम से षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद रखे गए हैं जिनके संक्षिप्त रूप सा, रे ग, म, प, ध और नि हैं।

वैज्ञानिकों ने परीक्षा करके सिद्ध किया है कि किसी पदार्थ में २५६ बार कंप होने पर षड्ज, २६८ २६३ बार कंप होने पर ऋषभ, ३२० बार कंप होने पर गांधार स्वर उत्पन्न होता है और इसी प्रकार बढ़ते बढ़ते ४८० बार कंप होने पर निषाद स्वर निकलता है। तात्पर्य यह कि कंपन जितना ही अधिक और जल्दी जल्दी होता है,

स्वर भी उतना ही ऊँचा चढ़ता जाता है। इस क्रम के अनुसार षड्ज से निषाद तक सातों स्वरों के समूह को सप्तक कहते हैं। एक सप्तक के उपरांत दूसरा सप्तक चलता है, जिसके स्वरों की कंपनसंख्या इस संख्या से दूनी होती है। इसी प्रकार तीसरा और चौथा सप्तक भी होता है। यदि प्रत्येक स्वर की कंपनसंख्या नियत से आधी हो, तो स्वर बराबर नीचे होते जायँगे और उन स्वरों का समूह नीचे का सप्तक कहलाएगा।



मानव – आदमी – **Human** - चार्ल्स डार्विन की “ओरिजिन ऑव स्पीशीज” नामक पुस्तक से पूर्व साधारण धारणा यह थी कि सभी जीवधारियों को किसी दैवी शक्ति (ईश्वर) ने उत्पन्न किया है तथा उनकी संख्या, रूप और आकृति सदा से ही निश्चित रही है। परंतु उक्त पुस्तक के प्रकाशन (सन् 1859) के पश्चात् विकासवाद ने इस धारणा का स्थान ग्रहण कर लिया और फिर अन्य जंतुओं की भाँति मनुष्य के लिये भी यह प्रश्न साधारणतया पूछा जाने लगा कि उसका विकास कब और किस जंतु अथवा जंतुसमूह से हुआ। इस प्रश्न का उत्तर भी डार्विन ने अपनी दूसरी पुस्तक “डिसेंट ऑव मैन” (सन् 1871) द्वारा देने की चेष्टा करते हुए बताया कि केवल वानर (विशेषकर मानवाकार) ही मनुष्य के पूर्वजों के समीप आ सकते हैं। दुर्भाग्यवश धार्मिक प्रवृत्तियोंवाले लोगों ने डार्विन के उक्त कथन का त्रुटिपूर्ण अर्थ (कि वानर स्वयं ही मानव का पूर्वज है) लगाकर, न केवल उसका विरोध किया वरन् जनसाधारण में बंदरों को ही मनुष्य का पूर्वज होने की धारणा को प्रचलित कर दिया, जो आज भी अपना स्थान बनाए हुए है। यद्यपि डार्विन मनुष्य विकास के प्रश्न का समाधान न कर सके, तथापि इन्होंने दो गूढ़ तथ्यों की ओर प्राणिविज्ञानियों का ध्यान आकर्षित किया :

- (1) मानवाकार कपि ही मनुष्य के पूर्वजों के संबंधी हो सकते हैं
- (2) मानवाकार कपियों तथा मनुष्य के विकास के बीच में एक बड़ी खाई है, जिसे लुप्त जीवाश्मों (विपसे) की खोज कर के ही कम किया जा सकता है।

यह प्रशंसनीय है कि डार्विन के समय में मनुष्य के समान एक भी जीवाश्म उपलब्ध न होते हुए भी, उसने भूगर्भ में छिपे ऐसे अवशेषों की उपस्थिति की भविष्यवाणी की जो सत्य सिद्ध हुई। अभी तक की खोज के अनुसार होमो सेपियन्स का उद्भव 2 लाख साल पहले पूर्वी अफ्रीका का माना जाता रहा है, लेकिन नई खोज के मुताबिक 3 लाख साल पहले ही होमो सेपियन्स के उत्तर अफ्रीका में विकास के सबूत मौजूद हैं।



मेहनत – कठिन परिश्रम - परिश्रम से अभिप्राय होता है वो परिश्रम जिससे विकास और रचना हो। इसी परिश्रम के बल पर बहुत से देशों ने अपने देश को उन्नति और विकास के शिखर पर पहुँचा दिया है। जो परिश्रम व्यर्थ में किया जाता है उसका कोई अर्थ नहीं होता है। जिन व्यक्तियों के जीवन में आलस भरा होता है वे कभी भी जीवन में उन्नति नहीं कर सकते हैं।



कल्पना – विचार – **Idea** - कल्पना एवं चिंतन की मानसिक प्रक्रियाओं की प्रकृति इतनी अधिक समान होती है कि साधारण भाषा में कभी-कभी इनका पर्यायवाची शब्दों के रूप में प्रयोग किया जाता है। समानता की दृष्टि से, दोनों ही क्रियाओं में विगत अनुभवों का प्रतिस्मरण तथा उनका नया संयोजन तैयार करना है, एवं दोनों की क्रियाएँ व्यक्ति की असंतुष्ट आवश्यकताओं और इच्छाओं की संतुष्टि का मार्ग खोजने के लिए उत्पन्न होती हैं। लेकिन दोनों के उद्देश्य भिन्न होते हैं। कल्पना अवास्तविक, अतार्किक एवं काल्पनिक रचनात्मक हल

आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए खोजती है, चिंतन का उद्देश्य हमेशा तार्किक एवं वास्तविक हल खोजना है और इसीलिए इसे तार्किक (रीजनिंग) क्रिया के नाम से भी पुकारा जाता है। चिंतन की क्रिया तब तक प्रारंभ नहीं होगी जब तक कोई वास्तविक समस्या आवश्यकताओं की संतुष्टि में मार्ग में उपस्थित न हो। लेकिन कल्पना अवास्तविक और काल्पनिक समस्याओं की उपस्थिति से भी प्रारंभ हो सकती है।



मशाल – **Cresset** - सुगमता पूर्वक लेकर चलने योग्य आग के स्रोत को मशाल (ज्वतबी) या 'लुकारी' कहते हैं। यह प्रकाश-स्रोत के रूप में प्रयोग की जाती है। मशाल में एक डण्डे के एक सिरे पर कपड़ा, घास आदि को तेल आदि से भिगोकर उसमें आग लगा दी जाती है और उसके दूसरे सिरे को हाथ से पकड़कर चल सकते हैं।



समता – अनु:पंता – **Parity** - भारत में समता/समानता का अधिकार

अनुच्छेद १५= धर्म, वंश, जाति, लिंग और जन्म स्थान आदि के आधार पर भेदभाव नहीं किया जायेगा। अनुच्छेद 15(4)= सामाजिक एवम् शैक्षिक दृष्टि से

पिछड़े वर्गों के लिए उपबन्ध। अनुच्छेद १६= लोक नियोजन के विषय में अवसर की समानता। अनुच्छेद १७= छुआछूत (अस्पृश्यता) का अन्त कर दिया गया है।



भूगोल – भूगोल-शास्त्र Geography - भूगोल (Geography) वह शास्त्र है जिसके द्वारा पृथ्वी के ऊपरी स्वरूप और उसके प्राकृतिक विभागों (जैसे पहाड़, महादेश, देश, नगर, नदी, समुद्र, झील, डमरुमध्य, उपत्यका, अधित्यका, वन आदि) का ज्ञान होता है। ... (१) विज्ञानों से प्राप्त तथ्यों का विवेचन करके मानवीय वासस्थान के रूप में पृथ्वी का अध्ययन करता है।

